प्लेटो

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न :- प्लेटो के 'काव्य सिद्धांत' विषय पर संक्षेप में विचार प्रकट कीजिए। या, प्लेटो ने कला को 'सत्य से दूर' सिद्ध करने के लिए जिन उक्तियों का आश्रय लिया है, उनका विवेचन विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :- यवनाचार्य प्लेटो का जन्म ई०पू० 427 और मृत्यु ई०पू० 347 माना जाता है। प्लेटो का वास्तविक नाम 'अरिस्टोकल्स' था। प्लेटो सुकरात के शिष्य थे। प्लेटो की इच्छा राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने की थी किन्तु सुकरात के प्रति किए गए दुर्व्यवहार से उनके मन में राजनीति के प्रति वितृष्णा और अरुचि उत्पन्न हो गयी। पर्याप्त भ्रमण करने के पश्चात 'प्लेटो' ने अपने प्रसिद्ध विद्यापीठ की स्थापना की। जीवन के अनुभव से वे दर्शन के प्रशस्ति गान के लिए बाध्य हुए और उनके मन में यह धारणा बद्धमूल हो गयी कि एकमात्र दर्शन से ही नगर और नागरिक दोनों का हित साधना हो सकता है। प्लेटो के काव्य संबंधी दृष्टिकोण का मूल दर्शनशास्त्र और काव्य के पारस्परिक विरोध में अन्तर्निहित है।

प्लेटो ने अलग से काव्यशास्त्र के ग्रंथ नहीं लिखे। काव्य संबंधी उनके सिद्धांत मुख्यतः तीन ग्रंथों इयोन (Ion) फयद्रोस (Phaedrus) और गणतंत्र (Republic) में बिखरे पड़े हैं। उनके प्रमुख काव्य सिद्धांतों का विवेचन प्रस्तुत है—

दैवी प्रेरणा सिद्धांत :- प्लेटो के प्रमुख सिद्धांतों में विद्वान 'दैवी प्रेरणा' के सिद्धांत की भी गणना करते हैं। वस्तुतः काव्य रचना के मूल स्रोत के रूप में दैवी प्रेरणा की चर्चा यूनानी आदि कवि होमर ने ही कर दी थी जिसका उल्लेख प्लेटो ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'अयोन' में 'अयोन और सुकरात' के बीच संवाद की योजना द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

प्लेटो के पूर्व विख्यात कवि होमर हेसियाद और पिंडार भी दैवी प्रेरणा अथवा नैसर्गिकी प्रतिभा को काव्य सृजन का मूल कारण मानते हैं। होमर ने अपने विख्यात महाकाव्यों का प्रणयन करते समय कला की अधिष्ठात्री दैवी (muse) से प्रार्थना की है कि वस्तुगत सत्य को प्रकट करने के लिए उसे प्रेरणा (इन्सपिरेशन) प्रदान करें। यहाँ काव्य का लक्ष्य आनन्द देना बताया गया है, ऐसा आनन्द

प्रेरणा से ही संभव है।

हेसियोद ई०पू० आठवीं शती ने भी होमर के उक्त कथन का समर्थन किया है। अन्तर इतना ही है कि जहाँ होमर ने काव्य का लक्ष्य आनन्द प्रदान करना माना है वहीं हेसियोद ने काव्य का लक्ष्य दैवी संदेश का वहन या शिक्षा प्रदान करना माना है।

पिंडार ने भी यह माना है कि मुख्य रूप से दैवी प्रेरणा अथवा नैसर्गिक प्रतिभा के कारण काव्य रचना करता है। तात्पर्य यह है कि होमर और 'हेसिओद' ने अंतःप्रेरणा को काव्य की रचना का हेतु स्वीकार किया जबकि कवि इन्द्रियजान और विवेक से शून्य होकर उन्माद की स्थिति में पहुँच, अपनी कल्पना द्वारा जीवन के गंभीरतम सत्यों का अवगाहन करता है।

प्लेटो ने भी अपने 'इओन' (Ion) नामक प्रसिद्ध संवाद में प्रेरणा का सूत्र संचालक कला की अधिष्ठात्र देवी (Muse) को ही माना है। इन्होंने यहाँ तक कहा है कि जो सुकवि महाकाव्यों की रचना करते हैं। वे अपनी खुद की कला का जरा भी उपयोग नहीं करते अपितु वे अपनी सुन्दर रचना का प्रणयन दैवी प्रेरणा से ही करते हैं।.....उस समय ईश्वर कवियों को मस्तिष्कविहीन कर अपना अनुचर बना लेता है। वह तब तक काव्य रचना नहीं कर सकता जब तक कि अनुप्रेरित होकर इन्द्रिय ज्ञान से शून्य न हो जाय और उसमें कोई मनोभाव शेष न रह जाय।" प्लेटो की दृष्टि में केवल कवि ही दैवी प्रेरणा से आविष्ट नहीं होता है। ~~[illegible]~~ में बल्कि काव्य का व्याख्याता या चारण भी भी उसी प्रकार आविष्ट होता है। फिड्रस में प्लेटो ने कला के आधार पर रचना करनेवाले कवि और दैवी प्रेरणा से वशीभूत होकर रचना करने वाले कवि का अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "काव्य देवी से आविष्ट कवि की रचना किसी कोमल और अक्षत आत्मा को अभिभूत कर लेती है और उसमें उन्माद का संचार करती हुई प्रगीत एवं अन्य कवियों के स्वर जगाती है।.....किन्तु जिनकी आत्मा को व्याख्या देवी की अनुग्रहजन्य विक्षिप्तता स्पर्श नहीं कर जाती वह अपनी कला के बल पर काव्य के मंदिर में प्रवेश नहीं पा सकता।" किन्तु प्लेटो ने कविता पर आक्षेप

करते हुए यह मान्यता स्थापित की है कि सदाचार और नैतिकता के विषय में कविता को अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता। क्योंकि कवि अधिष्ठातृ देवी से प्रेरणा प्राप्त कर संज्ञा से शून्य अवस्था में ही रचना प्रवृत्त होता है। कवि की यह प्रेरणा बाह्यतत्त्व से प्राप्त होने के कारण बौद्धिक नहीं कही जा सकती, इसलिए काव्य सृजन के समय कवि अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व से वंचित हो जाता है फिर दैवी प्रेरणा द्वारा अनुशासित अवस्था में कवि के मस्तिष्क की दशा का संतुलित रहना कठिन है। अतएव अपने भावुकतापूर्ण उन्माद के कारण तथा नैतिक नियंत्रण के अभाव में कवि जनता का मार्ग-दर्शन कैसे कर सकता है? उसका वक्तव्य अविश्वसनीय होता है।

किन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि जहाँ काव्य का विषय करुण मन की सूक्ष्म अनुभूतियाँ हैं। वहाँ बाह्य रूप का ऊपरी ज्ञान या दृश्य ज्ञान पुनः सृजन के लिए पर्याप्त कैसे हो सकता है।

प्लेटो का उपर्युक्त विवेचना डॉ० बच्चन सिंह के इस मत को बल प्रदान करता है कि प्लेटो का उद्देश्य इस सिद्धांत के खोखलेपन को उजागर करना था न कि इस सिद्धांत की स्थापना।

अनुकृति का सिद्धांत :— प्लेटो का दूसरा एवं सर्वप्रमुख सिद्धांत है – 'अनुकृति'। प्लेटो के पूर्ववर्ती यवनाचार्य ने भी काव्य को अनुकरणमूलक कला स्वीकार किया है। अतः प्लेटो ने यह सिद्धान्त प्रख्यात मत से ग्रहण कर लिया। गणतंत्र के दसवें अध्याय में प्लेटो ने काव्य के माध्यम से व्यक्त सत्य के स्वरूप का स्पष्टीकरण किया। उन्होंने "मूलसत्य का कर्ता ईश्वर को उस सत्य की अनुकृति स्थापित की और इस अनुकृति का अनुकरण काव्य को माना है।" इस प्रकार काव्य मूल सत्य से तिगुना दूर हो गया है।

प्लेटो के मत से अनुकर्ता अथवा छायानुकृतियों का निर्माता केवल बाह्य रूप का ज्ञाता होता है विषयों के सत्य रूप अथवा स्थिति को नहीं। विषय के अंतरंग ज्ञान अर्थात उसके सत्य स्वरूप के अभिज्ञान के लिए आचार्य प्लेटो ने सर्वथा अनावश्यक माना है। पश्चिम में कला

को जन कल्याण हित एवं सत्य से असंपृक्त रूप में देखने की प्रवृति का बीजारोपन प्लेटो के सिद्धांत से ही हुआ है।
डा० बच्चन सिंह :— 'प्लेटो का आदर्श था गणतन्त्र के नागरिक को समुन्नत नैतिक गुणों से सम्पन्न बनाना। अतः उसकी दृष्टि में काव्य काव्य वही है जो नैतिक है। प्लेटो संपूर्ण कलाकृति को आभास का आभास उस पर मिथ्यात्व का आरोप करता है।

प्लेटो कला को अनुभूति की अनुकृति कहकर ही संतोष नहीं करता उसके मुख्य तीन आरोप हैं —
① कलाकार का स्थान बढ़ई आदि से हीन है ② वह जिस वस्तु का अनुकरण करता है उसके वास्तविक उपयोग और प्रकृति को नहीं जानता ③ कविता वासना का सिंचन और पोषण करती है।

प्लेटो ने हीन अर्थ में कवि को अनुकर्ता कहकर कवि कर्म को निकृष्ट श्रेणी का माना है। उपयोगी कला के मुकाबले वह ललित कला को काफी नीचा दर्जा देता है। फिर भी प्लेटो के मूल से ललित कला में कुछ ऐसी विशेषताएं थी जो आगे के आलोचकों की आधार बनी।
① कला आनन्दप्रद है। ② कला सत्य का आभास देती है। अतः मिथ्या है। ③ उसने माध्यम और रूपात्मकता की चर्चा की। ④ चुनाव में सतर्कता।

प्लेटो कला के तीन रूप मानते हैं —
① उपयोग की कला
② निर्माण की कला
③ प्रतिरूप की कला।

प्रतिरूपक कलाकार वंशीवादन का काव्य में वर्णन करनेवाला कवि है।

प्लेटो काव्य के सत्य को अनुकरण का अनुकरण मानते हैं। प्लेटो के इस सिद्धांत पर पर्याप्त विवाद है। इसका मूल कारण है 'मीमेसिस' जिसका प्रयोग यवनाचार्य ने उक्त प्रसंग में किया है। इसका समानार्थी शब्द अंग्रेजी भाषा में न था 'मीमेसिस' में वर्णित अर्थ अनुकृति से व्यापक है। अंग्रेजी भाषा में इसका सबसे निकट शब्दानुवाद प्रतिदर्शन (Representation) ही हो सकता है। जिसका प्रयोग ललित कला के अनेक रूपों के लिए किया जाता है। प्लेटो के प्रसिद्ध व्याख्याकार कार्नफर्ड ने स्पष्ट कहा है कि

'मिमेसिस' का सामान्य प्रचलित रूपांतरण 'इमिटेशन' यश अनुकरण भ्रामक है। उन्होंने साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अनुकरण का भाव 'मीमोसिस' में अंतर्भूत है। मिमोसिस का अर्थ अनुकरण नहीं अनुसरण भी है।

डा० नगेन्द्र का मत है कि प्लेटो और प्लेटो के भी पूर्ववर्ती यवनाचार्यों ने अनुकरण शब्द का प्रयोग 'स्थूल' अर्थ में नकल या यथावत् प्रतिकृत के अर्थ में किया है।

प्लेटो द्वारा तिरस्कृत कवि का उद्धार न करने के लिए जब अरस्तु कटिबद्ध हुए तो उन्होंने इस शब्द में जो व्यापक अर्थ भरा इसे पुनः सृजन का नव निर्माण का पर्याय बना दिया। यह निश्चय ही प्लेटो का अभिप्रेत नहीं था। जहाँ अरस्तु एक ओर कला का बाह्य एवं अंतरंग प्रकृति का अनुकरण मानते थे वहाँ प्लेटो कलासृजन के निमित्त उसके विषय का संपूर्ण बाह्यान्तर ज्ञान भी आवश्यक नहीं समझते थे। प्लेटो ने कवि को निर्माता स्वीकार नहीं किया कि वह अपने विषय का पुनः सृजन पुनः निर्माण करता है। अधिक से अधिक वे इसकी सिद्धी इतनी ही मानते थे कि वह यथार्थ का प्रत्यंकन कर देता है। 'मीमेसिस' शब्द के अर्थ में भी सृजन या पुनः निर्माण का अंतर्भाव नहीं किया जा सकता।

प्लेटो ने गणतंत्र में 'मीमेसिस' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया—

① सामान्य और व्यापक अर्थ में।

② विशिष्ट और संकुचित अर्थ में।

बुचर- अरस्तु के अनुकरण शब्द का अर्थ 'सादृश्य विधान' अथवा मूल का पुनरुत्पादन करते हैं। सांकेतिक उल्लेख नहीं।

पाटस के अनुसार - वास्तव में अनुकरण का अर्थ है — आत्माभिव्यंजना से भिन्न जीवन की (अनुभूति) का पुनः सृजन।

स्काटजेम्स इसे जीवन के कल्पनात्मक पुनः निर्माण का पर्याय माना। एटकिन्स ने अनुकरण के संदर्भ में उच्च अनुकरण के भाव को उल्लेख माना है। उनका कहना है कि प्लेटो ने निम्न प्रकार के ऐन्द्रिय बोध से उत्पन्न कविता अथवा कला को हेय सिद्ध किया है, न कि उच्च ऐन्द्रिय

बोध से प्राप्त होनेवाली कविता को।

डब्ल्यु. सी. ग्रीन ने 'रिपब्लिक' के द्वितीय एवं तृतीय अध्याय में अनुकरण की मान्यता के विभेद की ओर संकेत किया है। इन्होंने दशम अध्याय में प्रस्तुत अनुकरण की मान्यता को अग्राह्य नहीं माना है। द्वितीय एवं तृतीय अध्याय की मान्यता का विवेचन नैतिकता के संदर्भ में विवेचित किया है। यथार्थ में अपने व्यापक अर्थ में उन्होंने अनुकरण शब्द का प्रयोग एक रूपक के अर्थ में किया है। और इसे संस्कृति और विचार के संबंधों का परिचायक माना है

सत्य यह है कि प्लेटो ने 'मेमेसिस शब्द का प्रयोग तीन प्रकार काव्य शैलियों के विभेद को प्रस्तुत करने के लिए किया है। विशुद्ध वर्णनात्मक शैली में अनुकरण की कोई आवश्यकता नहीं। सुखांत या दुखान्त नाटक की शैली में कवि अपने को पात्रों के माध्यम से व्यक्त करता है। अतएव यहाँ अनुकरण पाया जाता है।

भारतीय काव्यशास्त्र में भी नाटक के प्रसंग में अनुकरण शब्द का प्रयोग सर्वत्र किया गया है। आद्याचार्य भरत ही नाटक को 'लोकस्वभाव या लोकवृत का अनुकरन मानते थे किन्तु उनका अनुकरण अभिनय का पर्याय था। अभिनवगुप्त, विश्वनाथ, धनंजय आदि आचार्यों ने भी नट कर्म तथा रंगमंच के प्रयोग-विज्ञान के लिए ही अनुकरण शब्द का प्रयोग किया है। कवि कर्म के लिए नहीं।

वास्तव में एरिस्टोफेनीज के सिद्धांत तत्कालीन ग्रीक जीवन का चौमुख ह्रास दूर करने की दृष्टि से निर्मित हुए थे। वह एक उत्कल राष्ट्र प्रेमी और आदर्श राज्य की स्थापना का पक्षपाती था। सामाजिक, राजनीतिक राष्ट्रीय तथा शिक्षा संबंधी ह्रास और भाषण शास्त्रीयों की तर्क पद्धती से वह खिन्न हो उठा था। देश की ह्रासोन्मुख परिस्थितियों में उसने नेतृत्व ग्रहण किया। वह एक दूरदर्शी सहृदय व्यक्ति थे। मूलतः प्लेटो रहस्यवादी थे।

प्लेटो के अनुसार कवि जो कुछ कहता है भावावेश में कहता है। उसके कथन में न तो आत्ममंथन होता है, न गंभीर्य और न स्थायित्व। अपितु मनुष्य की वासनाओं को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

आदर्श व्यक्ति और आदर्श राज्य निर्माण के लिए उसने न तो दैवी प्रेरणा के लिए होमर जैसे कवि की रचनाओं में मिलनेवाले आध्यात्मि संकेतों और प्रतीकों का महत्व दिया। कला के उस अनुकरणात्मक रूप को जो ईश्वरीय या दैवी प्रेरणा से प्रेरित है (न कि सांसारिक दृष्टि से हृदय की कोरी भावुकता पूर्ण दुर्बलताओं को प्लेटो ने कला के मूल तत्व के रूप में स्वीकार किया।

उसने काव्य की तीन मुख्य शाखाएँ माना है — गीत, महाकाव्य और नाटक

प्लेटो भारतीय अद्वैतवादी की भाँति अनेकता में एकता विविधता में एकरूपता के दर्शन किए।